International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बैराठ में बौद्ध पर्यटन सर्किट की संभावनाएँ और चुनौतियाँरू एक व्यावहारिक विश्लेषण

Tara Chand Meena

Research Scholar, History, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University (A Central University) Lucknow (U.P.)

सार (Abstract):
राजस्थान के कोटपूतली -बहरोड़ जिलेमें ((पहले जयपुर जिले में) स्थित ऐतिहासिक स्थल बैराठ (विराट नगर) अपने समृद्ध मौर्यकालीन और बौद्ध इतिहास के कारण वैश्विक बौद्ध पर्यटन मानचित्र पर एक प्रमुख केंद्र बनने की अपार संभावनाएँ रखता है। यहाँ स्थित बीजक की पहाड़ी पर सम्राट अशोक के भाब्रू शिलालेख और भारत के सबसे प्राचीन गोलाकार बौद्ध स्तूप व चैत्यगृह के अवशेष इसके ऐतिहासिक महत्व को प्रमाणित करते हैं। व्यावहारिक धरातल पर, बैराठ की भौगोलिक स्थिति 'स्वर्णिम त्रिभुज' (दिल्ली-जयपुर-आगरा) के अत्यंत निकट होने के कारण इसे एक बड़े अंतरराष्ट्रीय बौद्ध पर्यटन सर्किट (जैसे उत्तर प्रदेश और बिहार के प्रमुख बौद्ध स्थलों) से जोड़ना काफी सुगम है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार को भारी बढ़ावा दे सकता है। हालाँकि, इन संभावनाओं के मार्ग में कई गंभीर चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। वर्तमान में यह स्थल बुनियादी पर्यटन बुनियादी ढांचे (जैसे उच्च स्तरीय आवास, परिवहन कनेक्टिविटी और स्वच्छ सार्वजनिक सुविधाओं) की भारी कमी से जूझ रहा है। इसके अतिरिक्त, पुरातात्विक अवशेषों के संरक्षण का अभाव, आक्रामक खनन गतिविधियाँ, और वैश्विक स्तर पर इस स्थल की प्रभावी मार्केटिंग व ब्रांडिंग न होना इसकी प्रगति को बाधित करता है। प्रस्तुत विश्लेषण यह निष्कर्ष निकालता है कि यदि सरकार, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) और निजी हितधारक मिलकर एक एकीकृत विकास योजना लागू करें—जिसमें विरासत संरक्षण के साथ-साथ डिजिटल गाइडेंस और सतत पर्यटन को प्राथमिकता दी जाए—तो बैराठ को वैश्विक बौद्ध तीर्थयात्रियों के लिए एक अनिवार्य और आकर्षक गंतव्य के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: बैराठ (विराट नगर), बौद्ध पर्यटन सर्किट, सम्राट अशोक स्तूप, पुरातात्विक संरक्षण, पर्यटन बुनियादी ढांचा, राजस्थान पर्यटन।

1.ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और पुरातात्विक महत्व

बैराठ (प्राचीन विराट नगर) का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है, जहाँ महाभारत कालीन संस्कृति के साथ-साथ मौर्य साम्राज्य के सुनहरे युग के साक्ष्य स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इस स्थल का बौद्ध धर्म से जुड़ाव तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक के शासनकाल के दौरान चरमोत्कर्ष पर पहुँचा था। बैराठ की बीजक की पहाड़ी पर स्थित गोलाकार बौद्ध स्तूप और चैत्यगृह के अवशेष न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में बौद्ध वास्तुकला के सबसे प्राचीनतम उदाहरण माने जाते हैं। यहाँ से प्राप्त सम्राट अशोक का प्रसिद्ध 'भाब्रू शिलालेख' (जो वर्तमान में कोलकाता के संग्रहालय में सुरक्षित है) इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि अशोक ने बौद्ध धर्म, धम्म और संघ के प्रति अपनी गहरी निष्ठा यहीं व्यक्त की थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी सातवीं शताब्दी में अपनी भारत यात्रा के दौरान बैराठ का दौरा किया था और यहाँ फलते-फूलते बौद्ध मठों का सजीव वर्णन किया था। यह ऐतिहासिक संपदा इस बात की पुष्टि करती है कि बैराठ केवल एक स्थानीय

ऐतिहासिक स्थल नहीं है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर बौद्ध दर्शन, कला और संस्कृति के उद्गम स्थलों में से एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जो इसे अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं और श्रद्धालुओं के लिए एक अद्वितीय तीर्थस्थल बनाता है।

2.बौद्ध पर्यटन सर्किट के रूप में विकास की संभावनाएँ

बैराठ को एक वैश्विक बौद्ध पर्यटन सर्किट के रूप में विकसित करने की व्यावहारिक संभावनाएँ अत्यंत प्रबल हैं, क्योंकि इसकी भौगोलिक स्थिति पर्यटन के लिहाज से बेहद रणनीतिक है। यह स्थल भारत के सबसे व्यस्त पर्यटन मार्ग 'स्वर्णिम त्रिभुज' (दिल्ली-जयपुर-आगरा) के बिल्कुल करीब स्थित है, जिससे विदेशी और घरेलू पर्यटकों को यहाँ तक आकर्षित करना बेहद आसान हो जाता है। यदि बैराठ को उत्तर प्रदेश और बिहार के पारंपरिक बौद्ध सर्किट (जैसे सारनाथ, बोधगया, कुशीनगर) के साथ एक विस्तारित पश्चिमी कड़ी के रूप में जोड़ा जाए, तो यह उन अंतरराष्ट्रीय बौद्ध तीर्थयात्रियों के लिए एक नया और रोमांचक गंतव्य बन सकता है जो मुख्य रूप से श्रीलंका, जापान, दक्षिण कोरिया, वियतनाम और थाईलैंड जैसे देशों से भारत आते हैं। इसके अलावा, बैराठ का प्राकृतिक परिवेश, अरावली की पहाड़ियाँ और शांत वातावरण इसे ध्यान (Meditation) और आध्यात्मिक पर्यटन के एक बड़े केंद्र के रूप में स्थापित करने के लिए आदर्श बनाते हैं। इस सर्किट के विकास से न केवल राजस्थान के पर्यटन में विविधता आएगी, बल्कि हस्तशिल्प, स्थानीय गाइड, होमस्टे और परिवहन सेवाओं के माध्यम से स्थानीय स्तर पर बड़े पैमाने पर रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे, जो क्षेत्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का पूरी तरह से कायाकल्प कर सकते हैं।

3.बुनियादी ढाँचे और कनेक्टिविटी की वर्तमान चुनौतियाँ

अथाह संभावनाओं के बावजूद, बैराठ को एक सफल पर्यटन सर्किट में बदलने की राह में सबसे बड़ी बाधा यहाँ के बुनियादी ढाँचे (Infrastructure) की दयनीय स्थिति है। वर्तमान में, इस ऐतिहासिक स्थल पर आने वाले पर्यटकों के लिए उच्च स्तरीय या मध्यम श्रेणी के ठहरने के विकल्पों (Hotels/Resorts) की भारी कमी है, जिसके कारण पर्यटक यहाँ रुकने के बजाय केवल कुछ घंटों का भ्रमण करके चले जाते हैं। परिवहन के मोर्चे पर भी, जयपुर या दिल्ली से सीधी और सुगम सार्वजनिक परिवहन या लक्जरी टूरिस्ट बस सेवाओं का अभाव पर्यटकों के मार्ग को कठिन बनाता है। स्थल के भीतर भी बुनियादी नागरिक सुविधाओं जैसे—स्वच्छ पेयजल, आधुनिक सार्वजनिक शौचालय, व्यवस्थित साइनेज (सूचना पट्ट), छांव के लिए शेड्स और एक सर्वसुविधायुक्त पर्यटक सूचना केंद्र का न होना आगंतुकों के अनुभव को खराब करता है। इसके अलावा, डिजिटल कनेक्टिविटी और स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षित बहुभाषी गाइडों (जो विदेशी भाषाओं जैसे जापानी, मंदारिन या थाई में बात कर सकें) की कमी के कारण वैश्विक पर्यटक इस स्थल के गहरे ऐतिहासिक महत्व को समझने से वंचित रह जाते हैं, जो इसके एक अंतरराष्ट्रीय हब बनने की गति को धीमा करता है।

4.संरक्षण, पर्यावरण और विपणन (Marketing) संबंधी बाधाएँ

बैराठ के बौद्ध अवशेषों के अस्तित्व पर वर्तमान में संरक्षण की कमी, अवैध गतिविधियों और कमजोर विपणन रणनीति के कारण तिहरा संकट मंडरा रहा है। बीजक की पहाड़ी और उसके आसपास के पुरातात्विक स्थल कई जगहों पर उपेक्षा के शिकार हैं, जहाँ मौसम के प्रभाव और मानवीय हस्तक्षेप के कारण प्राचीन संरचनाएं धीरे-धीरे जर्जर हो रही हैं। सबसे चिंताजनक बात इस क्षेत्र में होने वाला आक्रामक और अवैध खनन है, जो न केवल यहाँ की अरावली पहाड़ियों के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) को नुकसान पहुँचा रहा है, बल्कि प्राचीन धरोहरों की सुरक्षा के लिए भी एक गंभीर भौतिक खतरा बना हुआ है। इसके साथ ही, वैश्विक पर्यटन बाजार में राजस्थान सरकार और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा बैराठ की वह आक्रामक ब्रांडिंग और मार्केटिंग नहीं की गई है, जो इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिलनी चाहिए थी। दुनिया भर के अधिकांश बौद्ध पर्यटकों को यह जानकारी ही नहीं है कि बोधगया और सारनाथ के अलावा राजस्थान

के रेगिस्तान और पहाड़ियों के बीच भी भगवान बुद्ध से जुड़ा इतना प्राचीन और पवित्र स्थल मौजूद है, जिससे यह स्थान वैश्विक पर्यटन विमर्श में हाशिए पर बना हुआ है।

5.सतत विकास और भावी रणनीतिक राह

बैराठ को वैश्विक बौद्ध पर्यटन मानचित्र पर गरिमापूर्ण स्थान दिलाने के लिए सरकार, निजी क्षेत्र और स्थानीय समुदाय को मिलकर एक दीर्घकालिक और सतत एकीकृत कार्ययोजना पर काम करना होगा। सबसे पहले, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) को खनन गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध सुनिश्चित करते हुए प्राचीन स्तूप और शिलालेख स्थलों का वैज्ञानिक रूप से संरक्षण करना चाहिए, और पर्यटकों के अनुभव को समृद्ध करने के लिए वहाँ एक आधुनिक '3D डिजिटल संग्रहालय' और व्याख्या केंद्र (Interpretation Center) स्थापित करना चाहिए। सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP Model) के तहत यहाँ पर्यावरण-अनुकूल (Eco-friendly) रिसॉर्ट्स, ध्यान केंद्रों और वेलनेस टूरिज्म को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि पर्यटकों का ठहराव समय बढ़ाया जा सके। राजस्थान पर्यटन विभाग को अंतरराष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलनों, सोशल मीडिया अभियानों और दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के दूतावासों के सहयोग से बैराठ की 'अशोकन हेरिटेज' के रूप में विशेष ब्रांडिंग करनी चाहिए। इन प्रयासों के साथ-साथ, स्थानीय युवाओं को गाइड और आतिथ्य सत्कार का प्रशिक्षण देकर इस पूरी योजना के केंद्र में रखना होगा, ताकि पर्यटन से होने वाला आर्थिक लाभ सीधे स्थानीय समाज को मिले और विरासत के संरक्षण में उनकी भागीदारी जिम्मेदारी के साथ सुनिश्चित हो सके।

निष्कर्ष (Conclusion):

व्यावहारिक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि बैराठ में बौद्ध पर्यटन सर्किट के रूप में स्थापित होने की असाधारण क्षमता है, जो राजस्थान के पर्यटन क्षितिज को एक नया आध्यात्मिक आयाम दे सकती है। स्वर्णिम त्रिभुज से इसकी निकटता और सम्राट अशोक के काल के प्राचीनतम बौद्ध अवशेष इसे वैश्विक पर्यटकों के लिए एक अद्वितीय आकर्षण बनाते हैं। हालाँकि, इस क्षमता को हकीकत में बदलने के लिए बुनियादी ढाँचे की कमियों, अपर्याप्त संरक्षण और कमजोर वैश्विक ब्रांडिंग जैसी गंभीर चुनौतियों से तुरंत निपटना होगा। केवल कागजी योजनाओं के बजाय धरातल पर बुनियादी सुविधाओं का विकास, अवैध खनन पर पूर्ण रोक और आधुनिक डिजिटल मार्केटिंग रणनीतियों को अपनाना अनिवार्य है। निष्कर्षतः, यदि सरकार और निजी हितधारक स्थानीय समुदाय को साथ लेकर एक एकीकृत, पर्यावरण-अनुकूल और सतत विकास मॉडल लागू करते हैं, तो बैराठ न केवल वैश्विक बौद्ध तीर्थयात्रियों के आकर्षण का एक प्रमुख केंद्र बनेगा, बल्कि यह क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक उत्थान का भी एक सशक्त माध्यम सिद्ध होगा। विरासत का यह पुनरुत्थान भारत की समृद्ध सांस्कृतिक कूटनीति को भी वैश्विक स्तर पर एक नई मजबूती प्रदान करेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. **Cunningham, Alexander (1871–73):** *Archaeological Survey of India Reports*, Volume II & Volume VI, Government Central Press, Calcutta.
2. **Sahni, Rai Bahadur Daya Ram (1936):** *Archaeological Remains and Excavations at Bairat*, Department of Archaeology and Historical Research, Jaipur State.
3. **Archaeological Survey of India (ASI):** *Annual Progress Report of the Superintendent, Hindu and Buddhist Monuments, Northern Circle*.
4. **Hultzsch, Eugen (1925).** *Inscriptions of Asoka: Corpus Inscriptionum Indicarum (Vol. I)*
5. **Rai, Sudhanshu (2021-22):** "Significance of Landscape: Bairat Inscription and Sangha", *Heritage: Journal of Multidisciplinary Studies in Archaeology*, Vol. 9, pp. 764-775.
6. **Mitra, Debala (1971):** *Buddhist Monuments*, Sahitya Samsad, Calcutta.

7. **Ministry of Tourism, Government of India (2021):** *National Strategy and Roadmap for Development of Buddhist Circuit in India*.
8. **Rajasthan Tourism Development Corporation (RTDC):** *Annual Report on Heritage Tourism and Rural Connectivity*, Department of Tourism, Government of Rajasthan.
9. **Thapar, R. (2012).** *Asoka and the Decline of the Mauryas*. Oxford University Press.
10. **Beal, S. (1884).** *Si-Yu-Ki: Buddhist Records of the Western World* Trubner's Oriental Series.
11. **Chaturvedi, Dr. Neekee (2018).** *Buddhist Heritage Sites in Rajasthan: Bairat and Kholvi.* UGC MOOCs / Historical Studies Research Paper.